ओम् शान्ति 14-10-10 मधुबन

प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश (दादी गुल्जार)

आज बापदादा के पास पहुंची और सदा के सदृश्य दूर से नयन मिलन मनाते अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति करते समीप पहुंच गई और बापदादा ने आओ मेरे दिल की दुलारी बच्ची कह अपने अमूल्य बाहों के हार में समा लिया और कुछ समय बाद बाबा बोले बच्ची, आज क्या समाचार लाई हो ? मैंने कहा बाबा अब तो फारेन वालों का पीस आफ माइन्ड का प्रोग्राम शुरू है। उन्हों को रिफ्रेश करने वाले भी आ गये हैं। मुख्य बहिनें भी आ गई हैं। जानकी दादी भी चक्कर लगाए आ गई हैं। बापदादा मुस्कराये और बोले, विदेश के निमित्त बच्चों में भी सर्विस का उमंग-उत्साह अच्छा है। सेवा को आगे बढ़ाते रहते हैं। बापदादा बच्चों की दिल से सेवा देख कहते हैं - **''वाह मेरे साथी बच्चे वाह!''** जनक बच्ची भी सबको रिफ्रेश करके आई। बापदादा बच्ची का उमंग-उत्साह देख खुश है। उसके बाद बाबा बोले, सेवा में तो भारतवासी या विदेश वासी सबको देख बाप खुश है लेकिन अब के समय प्रमाण अब हर बच्चे को तीनों सेवा आवश्यक हैं। **मन्सा सेवा द्वारा मास्टर ज्ञान सूर्य बन सकाश वा किरणें देना। दूसरा – वाणी द्वारा सर्व को सम्मान देना और सबको उमंग है कि अब बाप को प्रत्यक्ष करना है, मेरा बाबा आ गया, वह कर रहे हैं और कर्म द्वारा कर्मयोगी की स्थिति द्वारा चाहे विश्व में चाहे मधुबन वा सेवा साथियों में शक्तिशाली मधुर वायुमण्डल बनाना।** यह तीनों सेवा आवश्यक हैं क्योंकि मन्सा सेवा में बिजी रहने से हर ब्राह्मण आत्मा स्वयं को रहमदिल मास्टर दाता स्वरूप में सहज अनुभव करेगी और यह सेवा अब बहुत जरूरी है। समय को समीप लाने वाली है।

उसके बाद बाबा बोले बाप को हर बच्चे से प्यार है क्योंकि कोटों में कोई तो है जो पहचान लिया मेरा बाबा है। अब बाप चाहते हैं हर एक को यही पुरुषार्थ करना है कि **मैं कोई में कोई माला का मणका बन बाप के हृदय में समा जाऊं।** बोलो, सर्व बच्चों में हिम्मत है ना! एक हिम्मत का कदम आपका और हजार कदम बाप के साथ का है ही। बोलो, फरिश्ता बन उड़ना आता है ना! बाप की आशाओं का सितारा हैं ना! ऐसे कहते बाबा के नयनों में एक एक ब्राह्मण बच्चा आंखों का नूर बन आता रहा। बापदादा एक एक को दिल का दुलार दे रहे थे, यह दृश्य भी अति न्यारा और प्यारा था। मैं भी देखते देखते साकार वतन पहुंच गई। अच्छा। ओम् शान्ति।